

Chapter चौदह

विश्व व्यवस्था की पद्धति

इस अध्याय में मनु के लिए भगवान् द्वारा नियत कर्तव्यों का वर्णन हुआ है। सारे मनु तथा उन

सबके पुत्र, ऋषि, देवता और इन्द्र भी भगवान् के विभिन्न अवतारों के आदेशों के अनुसार कार्य करते हैं। प्रत्येक चतुर्युग में सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग आते हैं और प्रत्येक चतुर्युग के अन्त में भगवान् के आदेशानुसार कर्म करने वाले ऋषिगण वैदिक ज्ञान का वितरण करके शाश्वत धार्मिक नियमों की पुनःस्थापना करते हैं। मनु का कर्तव्य धर्म की पद्धति को पुनःस्थापित करना है। मनु के पुत्र उसके आदेशों का पालन करते हैं और इस प्रकार सारा विश्व मनु तथा उसकी सन्तानों द्वारा पालित होता है। इन्द्रगण स्वर्गलोकों के विभिन्न शासक हैं। वे देवताओं की सहायता से तीनों लोकों पर शासन चलाते हैं। भगवान् भी विभिन्न युगों में अवतार के रूप में प्रकट होते हैं। वे सनक, सनातन, याज्ञवल्क्य, दत्तात्रेय तथा अन्यो के रूप में प्रकट होते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान, कर्तव्य, योग वे सिद्धान्तों इत्यादि के विषय में उपदेश देते हैं। वे मरीचि इत्यादि के रूप में सन्तानें उत्पन्न करते हैं; राजा के रूप में वे दुष्टों को दण्ड देते हैं और काल के रूप में वे सृष्टि का संहार करते हैं। कोई तर्क कर सकता है कि, “यदि सर्वशक्तिमान् भगवान् मात्र अपनी इच्छा से ही सब कुछ कर सकते हैं, तो फिर उन्होंने इतने महापुरुषों को व्यवस्था का भार क्यों दे रखा है?” जो लोग माया के वश में हैं, वे यह नहीं समझ सकते हैं कि भगवान् किस तरह और क्यों ऐसा करते हैं।

श्रीराजोवाच

मन्वन्तरेषु भगवन् यथा मन्वा दयस्त्वमे ।
यस्मिन्कर्मणि ये येन नियुक्तास्तद्ददस्व मे ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-राजा उवाच—राजा परीक्षित ने कहा; मन्वन्तरेषु—प्रत्येक मन्वन्तर में; भगवन्—हे महर्षि; यथा—जिस तरह; मनु-आदयः—मनु इत्यादि; तु—लेकिन; इमे—ये; यस्मिन्—जिसमें; कर्मणि—कार्यकलाप; ये—जो लोग; येन—जिसके द्वारा; नियुक्ताः—नियुक्त किये गये; तत्—वह; वदस्व—कृपया वर्णन करें; मे—मुझसे।

महाराज परीक्षित ने जिज्ञासा की : हे परम ऐश्वर्यशाली शुकदेव गोस्वामी! कृपा करके मुझे बतायें कि प्रत्येक मन्वन्तर में मनु तथा अन्य लोग किस तरह अपने-अपने कर्तव्यों में लगे रहते हैं और वे किसके आदेश से ऐसा करते हैं।

श्रीऋषिरुवाच

मनवो मनुपुत्राश्च मुनयश्च महीपते ।
इन्द्राः सुरगणाश्चैव सर्वे पुरुषशासनाः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

श्री-ऋषिः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; मनवः—सारे मनु; मनु-पुत्राः—मनु के पुत्र; च—तथा; मुनयः—सारे ऋषि; च—तथा; मही-पते—हे राजा; इन्द्राः—सारे इन्द्र; सुर-गणाः—सारे देवता; च—तथा; एव—निश्चय ही; सर्वे—वे सभी; पुरुष-शासनाः—परम पुरुष के शासन के अन्तर्गत।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजा! सारे मनु, मनु के पुत्र, ऋषि, इन्द्र तथा देवता भगवान् के यज्ञ जैसे विविध अवतारों में नियुक्त किये जाते हैं।

यज्ञादयो याः कथिताः पौरुष्यस्तनवो नृप ।
मन्वादयो जगद्यात्रां नयन्त्याभिः प्रचोदिताः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

यज्ञ-आदयः—भगवान् का अवतार, जो यज्ञ आदि कहलाता है; याः—जो; कथिताः—पहले कहे जा चुके हैं; पौरुष्यः—परम पुरुष के; तनवः—अवतार; नृप—हे राजा; मनु-आदयः—मनु तथा अन्य; जगत्-यात्राम्—विश्व के कार्य; नयन्ति—संचालित करते हैं; आभिः—अवतारों द्वारा; प्रचोदिताः—प्रेरित होकर।

हे राजा! मैं आपसे पहले ही भगवान् के विभिन्न अवतारों का वर्णन कर चुका हूँ—यथा यज्ञ अवतार का। यही अवतार मनुओं तथा अन्यो का चुनाव करते हैं और उन्हीं के आदेश पर वे विश्व-व्यवस्था का संचालन करते हैं।

तात्पर्य : सारे मनु भगवान् के विविध अवतारों के आदेशों का पालन करते हैं।

चतुर्युगान्ते कालेन ग्रस्ताञ्छ्रुतिगणान्यथा ।
तपसा ऋषयोऽपश्यन्त्यतो धर्मः सनातनः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

चतुः-युग-अन्ते—प्रत्येक चार युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग) के अन्त में; कालेन—समय बीतने पर; ग्रस्तान्—विनष्ट; श्रुति-गणान्—वैदिक उपदेश; यथा—जिस तरह; तपसा—तपस्या से; ऋषयः—ऋषिगण; अपश्यन्—दुरुपयोग देखकर; यतः—जहाँ से; धर्मः—वृत्तिपरक कार्य; सनातनः—शाश्वत।

प्रत्येक चार युगों के अन्त में महान् सन्तपुरुष जब यह देखते हैं कि मानव के शाश्वत वृत्तिपरक कर्तव्यों का दुरुपयोग हुआ है, तो वे धर्म के सिद्धान्तों की पुनःस्थापना करते हैं।

तात्पर्य : इस श्लोक में धर्म तथा सनातन ये दो शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। सनातन का अर्थ है “शाश्वत” और धर्म का अर्थ है “वृत्तिपरक कर्तव्य।” सतयुग से कलियुग आते-आते धर्म तथा वृत्तिपरक कर्तव्य में क्रमशः ह्रास आता जाता है। सतयुग में धर्म का पूरी तरह पालन होता है। किन्तु त्रेता में धर्म की कुछ-कुछ उपेक्षा होती है और केवल तीन-चौथाई धार्मिक कर्तव्य चालू रह पाते हैं। द्वापर में केवल आधा धर्म रह जाता है और कलियुग में केवल एक चौथाई धर्म रहता है, जो क्रमशः

लुप्त हो जाता है। कलियुग के अन्त में धर्म या मानव के वृत्तिपरक कर्तव्य प्रायः विनष्ट हो जाते हैं। निस्सन्देह, हम इस कलियुग में केवल पाँच हजार वर्ष भीतर प्रविष्ट हुए हैं फिर भी सनातन धर्म का हास अत्यन्त मुखर है। अतएव ऋषियों का कर्तव्य है कि वे *सनातन धर्म* के हित के बारे में गम्भीरता से सोचें और इसे समस्त मानव समाज के लाभ के लिए पुनःस्थापित करने का प्रयास करें। कृष्णभावनामृत आन्दोलन इसी सिद्धान्त के अनुसार प्रारम्भ किया गया है। जैसा कि *श्रीमद्भागवत* (१२.३.५१) में कहा गया है—

कलेर्दोषनिधे राजत्रस्ति ह्येको महान् गुणः ।

कीर्तनाद् एव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत् ॥

समग्र कलियुग दोषों से पूर्ण है। यह दोषों के असीम समुद्र की भाँति है, किन्तु कृष्णभावनामृत आन्दोलन अत्यन्त प्रामाणिक है। अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों का अनुगमन करते हुए उनके आदेशों के अनुसार हम इस कृष्ण-कीर्तन के आन्दोलन को विश्वभर में जारी रखने का प्रयास कर रहे हैं जिसका उद्घाटन आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व श्री चैतन्य ने संकीर्तन आन्दोलन, *कृष्णकीर्तन*, का उन्होंने किया था। अब यदि इस आन्दोलन के उद्घाटक विधि-विधानों का दृढ़ता से पालन करें और सारे मानव समाज के लाभ के लिए इस आन्दोलन का प्रसार करें तो वे सनातन धर्म की पुनःस्थापना करते हुए नवीन जीवनशैली का सूत्रपात करेंगे। मनुष्य का सनातन धर्म है कृष्ण की सेवा करना। *जीवेर 'स्वरूप' हय—कृष्णे नित्य दास। सनातन धर्म* का यही सारांश है। *सनातन* का अर्थ है नित्य या शाश्वत और *कृष्ण-दास* का अर्थ है “कृष्ण का दास।” मनुष्य का शाश्वत वृत्तिपरक कर्तव्य कृष्ण की सेवा करना है। कृष्णभावनामृत आन्दोलन का यही सार है।

ततो धर्म चतुष्पादं मनवो हरिणोदिताः ।

युक्ताः सञ्चारयन्त्यद्वा स्वे स्वे काले महीं नृप ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात् (कलियुग के अन्त में); धर्मम्—धर्म; चतुः-पादम्—चार भागों में; मनवः—सारे मनु; हरिणा—भगवान् द्वारा; उदिताः—उपदिष्ट; युक्ताः—लगे हुए; सञ्चारयन्ति—पुनर्स्थापना करते हैं; अद्वा—प्रत्यक्ष; स्वे स्वे—अपने-अपने; काले—समय में; महींम्—इस जगत में; नृप—हे राजा ।

हे राजा! तत्पश्चात् भगवान् के आदेशानुसार व्यस्त होकर सारे मनु चारों अंशों में धर्म की साक्षात् पुनर्स्थापना करते हैं।

तात्पर्य : धर्म की पूरी स्थापना चारों अंशों (चरणों) में जिस तरह की जा सकती है उसकी व्याख्या *भगवद्गीता* में दी गई है। *भगवद्गीता* (४.१) में भगवान् कहते हैं—

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।

विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥

“मैंने इस सनातन अविनाशकारी योगविद्या का उपदेश सूर्यदेव विवस्वान को दिया और उसने इसे मानव जाति के पिता मनु को दिया। मनु ने आगे इसे इक्ष्वाकु को दिया।” परम्परा विधि यही है। इसी विधि का पालन करते हुए कृष्णभावनामृत आन्दोलन सारे विश्व में *भगवद्गीता* यथारूप के सिद्धान्तों की शिक्षा, बिना किसी फेर बदल के देता, है। यदि आज के भाग्यशाली लोग भगवान् कृष्ण के उपदेशों को स्वीकार कर लें तो वे निश्चय ही श्री चैतन्य महाप्रभु का संदेश प्रसारित करने में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। श्री चैतन्य महाप्रभु चाहते थे कि कम से कम भारत के सभी लोग इस उद्देश्य के उपदेशक बन जायें। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को चाहिए कि वह गुरु बनकर मानवता की शान्ति तथा समृद्धि के लिए भगवान् के उपदेशों का प्रचार सारे विश्व में करे।

पालयन्ति प्रजापाला यावदन्तं विभागशः ।

यज्ञभागभुजो देवा ये च तत्रान्विताश्च तैः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

पालयन्ति—आदेश पूरा करते हैं; प्रजा-पाला:—विश्व के शासक, अर्थात् मनु के पुत्र तथा पौत्र; यावत् अन्तम्—मनु के शासन के अन्त तक; विभागशः—विभागों में; यज्ञ-भाग-भुजः—यज्ञों के फल के भोक्ता; देवाः—देवतागण; ये—अन्य; च—भी; तत्र अन्विताः—उस काम में लगे हुए; च—भी; तैः—उनके द्वारा।

यज्ञों के फलों का भोग करने के लिए विश्व के शासक, अर्थात् मनु के पुत्र तथा पौत्र, मनु के शासन काल के अन्त तक भगवान् के आदेशों का पालन करते हैं। देवता भी इन यज्ञों के फलों में भाग प्राप्त करते हैं।

तात्पर्य : जैसाकि *भगवद्गीता* (४.२) में कहा गया है—

एवं परम्पराप्राप्तम् इमं राजर्षयो विदुः

“यह परम विज्ञान परम्परा शृंखला से होकर प्राप्त किया गया और राजर्षियों ने इसे उसी प्रकार से समझा।” यह परम्परा प्रणाली मनु से इक्ष्वाकु और इक्ष्वाकु से उसके पुत्र-पौत्रों तक चलती है। विश्व के शासक परम्परा-पद्धति में भगवान् के आदेशों का पालन करते हैं। जो कोई शान्तिपूर्ण जीवन बिताना

चाहता है उसे इस परम्परा प्रणाली में भाग लेकर यज्ञ करने चाहिए। हमें श्री चैतन्य महाप्रभु की गौडीय वैष्णव परम्परा की भाँति सारे विश्व में संकीर्तन यज्ञ करने चाहिए (यज्ञैः सङ्कीर्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः)। श्री चैतन्य महाप्रभु इस कलिकाल में भगवान् के अवतार हैं। यदि सारे विश्व में तेजी के साथ सङ्कीर्तन आन्दोलन फैलाया जाए है, तो वे आसानी से तुष्ट किये जा सकेंगे। इससे लोग सुखी भी बनेंगे; इसमें कोई सन्देह नहीं है।

इन्द्रो भगवता दत्तां त्रैलोक्यश्रियमूर्जिताम् ।

भुञ्जानः पाति लोकांस्त्रीन्कामं लोके प्रवर्षति ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

इन्द्रः—स्वर्ग का राजा; भगवता—भगवान् के द्वारा; दत्ताम्—दिया गया; त्रैलोक्य—तीनों लोकों का; श्रियम् ऊर्जिताम्—बड़े ऐश्वर्य; भुञ्जानः—भोगते हुए; पाति—पालन करता है; लोकान्—सारे लोकों को; त्रीन्—तीनों लोकों के भीतर; कामम्—जितना आवश्यक हो; लोके—संसार में; प्रवर्षति—बरसाता है।

भगवान् से आशीष प्राप्त करके तथा इस तरह अत्यधिक विकसित ऐश्वर्य का भोग करते हुए स्वर्ग का राजा इन्द्र सभी लोकों पर पर्याप्त वर्षा करके तीनों लोकों के सारे जीवों का पालन करता है।

ज्ञानं चानुयुगं ब्रूते हरिः सिद्धस्वरूपधृक् ।

ऋषिरूपधरः कर्म योगं योगेशरूपधृक् ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

ज्ञानम्—दिव्य ज्ञान; च—तथा; अनुयुगम्—युग के अनुसार; ब्रूते—बताता है; हरिः—भगवान्; सिद्ध-स्वरूप-धृक्—सनक तथा सनातन जैसे मुक्त पुरुषों का रूप धारण करके; ऋषि-रूप-धरः—याज्ञवल्क्य जैसे महान् ऋषियों का रूप धारण करके; कर्म—कर्म; योगम्—योग पद्धति; योग-ईश-रूप-धृक्—दत्तात्रेय जैसे महान् योगी का रूप धारण करके।

प्रत्येक युग में भगवान् हरि दिव्य ज्ञान का उपदेश देने के लिए सनक जैसे सिद्धों का रूप धारण करते हैं, याज्ञवल्क्य जैसे महान् ऋषियों का रूप धारण करके वे कर्मयोग की शिक्षा देने के लिए तथा योग की विधि सिखाने के लिए दत्तात्रेय जैसे महान् योगियों का रूप धारण करते हैं।

तात्पर्य : मानव समाज के कल्याण हेतु भगवान् विश्व पर ठीक प्रकार से शासन करने के लिए न केवल मनु के रूप में अवतरित होते हैं, अपितु वे एक शिक्षक, योगी, ज्ञानी इत्यादि का रूप भी प्रदर्शित करते हैं। अतएव मानव समाज का धर्म है कि भगवान् द्वारा बताये गये कर्म के मार्ग को

स्वीकार करे। वर्तमान युग में सारे वैदिक ज्ञान का सार *भगवद्गीता* में पाया जाता है, जिसकी शिक्षा स्वयं भगवान् ने दी। वही भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का रूप धारण करके सारे विश्व में *भगवद्गीता* की शिक्षाओं का प्रसार करते हैं। दूसरे शब्दों में, भगवान् हरि मानव समाज पर इतने दयालु तथा कृपालु हैं कि वे पतितात्माओं को अपने धाम वापस ले जाने के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं।

सर्ग प्रजेशरूपेण दस्यून्हन्यात्स्वराड्वपुः ।
कालरूपेण सर्वेषामभावाय पृथग्गुणः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

सर्गम्—सन्तान की उत्पत्ति; प्रजा-ईश-रूपेण—प्रजापति मरीचि इत्यादि के रूप में; दस्यून्—चोरों तथा उचक्रों को; हन्यात्—मारते हैं; स्व-राट्-वपुः—राजा के रूप में; काल-रूपेण—काल के रूप में; सर्वेषाम्—प्रत्येक वस्तु के; अभावाय—संहार के लिए; पृथक्—भिन्न; गुणः—गुणों से युक्त।

भगवान् प्रजापति मरीचि के रूप में सन्तान उत्पन्न करते हैं; राजा का रूप धारण करके वे चोर-उचक्रों का वध करते हैं और काल के रूप में वे सबका संहार करते हैं। भौतिक संसार के जितने गुण हैं उन्हें भगवान् के ही गुण समझना चाहिए।

स्तूयमानो जनैरैभिर्मायया नामरूपया ।
विमोहितात्मभिर्नानादर्शनैर्न च दृश्यते ॥ १० ॥

शब्दार्थ

स्तूयमानः—ढूँढे जाने पर; जनैः—सामान्य लोगों द्वारा; एभिः—उन सबके द्वारा; मायया—माया के वशीभूत; नाम-रूपया—विभिन्न नामों तथा रूपों से युक्त; विमोहित—मोहग्रस्त हुआ; आत्मभिः—भ्रम द्वारा; नाना—विविध; दर्शनैः—दार्शनिक विचारों से; न—नहीं; च—तथा; दृश्यते—भगवान् को पाया जा सकता है।

सामान्य लोग माया के द्वारा विमोहित हो जाते हैं, अतएव वे परम सत्य भगवान् को विविध प्रकार के शोधों तथा दार्शनिक चिन्तन के द्वारा पाने का प्रयास करते हैं। किन्तु इतने पर भी वे भगवान् का दर्शन पाने में असमर्थ रहते हैं।

तात्पर्य : इस भौतिक जगत में सृष्टि, पालन तथा संहार के लिए जितने भी कार्य-प्रतिकार्य घटित होते हैं, वे वास्तव में एक परम पुरुष द्वारा कराए जाते हैं। ऐसे नाना प्रकार के दार्शनिक हैं, जो परम कारण का अन्वेषण विभिन्न नामों तथा रूपों के अन्तर्गत करने का प्रयास करते हैं, किन्तु वे उन भगवान् कृष्ण को ढूँढ पाने में असमर्थ रहते हैं, जो *भगवद्गीता* में यह बताते हैं कि वे प्रत्येक वस्तु के उद्गम हैं और समस्त कारणों के कारण हैं (*अहं सर्वस्य प्रभवः*)। यह असमर्थता भगवान् की माया के कारण

है। अतएव भक्तगण भगवान् को यथारूप में स्वीकार करते हैं और भगवान् की महिमाओं का कीर्तन करने मात्र से सुखी रहते हैं।

एतत्कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्तितम् ।

यत्र मन्वन्तराण्याहुश्चतुर्दश पुराविदः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

एतत्—ये सब; कल्प—ब्रह्मा के एक दिन में; विकल्पस्य—एक कल्प में हुए परिवर्तनों का, यथा मनुओं में परिवर्तन; प्रमाणम्—साक्ष्य; परिकीर्तितम्—(मेरे द्वारा) वर्णन किया गया; यत्र—जहाँ; मन्वन्तराणि—मन्वन्तर; आहुः—कहा जाता है; चतुर्दश—चौदह; पुरा-विदः—विद्वान्।

एक कल्प में, अर्थात् ब्रह्मा के एक दिन में कई परिवर्तन होते हैं, जो विकल्प कहलाते हैं। हे राजा! मैं इन सबका वर्णन पहले ही कर चुका हूँ। विद्वान् व्यक्तियों ने जो भूत, वर्तमान तथा भविष्य को जानते हैं विश्वास पूर्वक जान लिया है कि ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु होते हैं।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कंध के अन्तर्गत “विश्व व्यवस्था की पद्धति” नामक चौदहवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।